

॥ आरोग्यचिंतन ॥

पत्रिका

॥ शास्त्रात्मकप्रकाशार्थ एषा चिन्तनपत्रिका ॥



अप्रैल २०२०

AROGYACHINTAN PATRIKA



संपादकीय

अल्फ्रेड नोबेल, एक स्विडिश कैमिस्ट, इन्जिनिअर और उद्योगपति के इच्छा के अनुसार, १८९५ में भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, शारीरक्रिया एवं चिकित्सा शास्त्र, साहित्य और शांति के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार स्थापित किए गए और 'For the greatest benefit to the mankind' हेतु १० डिसेंबर १९०१ से प्रदान किए जा रहे हैं।

नववर्ष के आरंभ में हम सामान्यतः विगतवर्ष कार्यकलापों और परिणामों का अवलोकन करते हैं और भविष्य के प्रति विचार-विमर्श करते हैं। आज हम वर्ष २०१५ से २०१९ तक वैद्यक शास्त्र को मिले हुए नोबेल पुरस्कारों का अवलोकन कर आधुनिक शास्त्र किस दिशा में जा रहा है, इस पर विचार करेंगे।

वर्ष २०१५ में वैद्यक शास्त्र के क्षेत्र में William C. Campbell और Satoshi Ōmura (संयुक्त पुरस्कार) तथा Youyou Tu (संयुक्त पुरस्कार) इनको संसर्गजन्य विकारों में चिकित्सा हेतु एक नवीनतम औषधि के आविष्कार हेतु नोबेल पुरस्कार दिया गया। इन आविष्कारों का मानव जाती हेतु लाभकारी परिणाम अपरिमित है जिससे संसर्गजन्य विकारों के उपचारों में क्रांती लाई है।

Youyou Tu, चायना अड़केमी ऑफ ट्रेडिशनल चाइनीज मेडिसिन के मुख्य प्रोफेसर ने Artemisinin कि खोज की, जिससे मलेरिया के कारण पीडित रोगियों की मृत्युदर कम की है। उन्होंने मलेरिया उपचार विकसित करने हेतु चायनीज हर्बल चिकित्सा के प्राचीन साहित्य की खोज की। इस आविष्कार में पारंपारिक चीनी चिकित्सा में ज्ञात एक तिक्त औषधी वनस्पती एक उपयुक्त विकल्प के रूप में प्राप्त हुई। उन्होंने इस वनस्पती के शोधन हेतु एक प्रक्रिया विकसित की जिससे इस वनस्पती के सक्रिय घटक Artemisinin की प्राप्ति हुई, जो की मलेरिया के चिकित्सा में उल्लेखनीय रूप से प्रभावी है। नोबेल पुरस्कार के शृंखला में किसी वनस्पति घटकद्रव्यों के औषधि परिणामों को पुरस्कार मिलना यह अत्यंत आश्चर्यजनक है।

लङ्घनं स्वेदनं कालो यवाग्वस्तिक्तको रसः॥

पाचनान्यविपक्षानां दोषाणां तरुणे ज्वरे। – चरक संहिता

हमे यह ज्ञात है की सदियों से विभिन्न आयुर्वेद ग्रंथों में अनेक प्रकार के ज्वरों का वर्णन किया है तथा उनके चिकित्सा हेतु विभिन्न तिक्त कषायों का उपदेश किया है।

वर्ष २०१६ में वैद्यक शास्त्र के क्षेत्र में Yoshinori Ohsumi को Autophagy के तन्त्र संबंधी अपने आविष्कार हेतु नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। Autophagy प्राणियों के कोषाणूओं में होने वाली एक आवश्यक प्रक्रिया है।

यह आविष्कार महत्वपूर्ण है क्योंकि लंघन चिकित्सा के साथ इसका गहरा संबंध है। प्राणी शरीर में Autophagy एक अत्यंत परम आवश्यक क्रिया है, जिससे जीर्ण कोषाणू तत्वों के पुनरुपयोग से शरीर के अन्य कोषाणूओं का प्रीणन होता रहता है। आयुर्वेद के भाषा में यदि कहे तो Autophagy का वर्णन यह लंघन के कार्मिकता के बारे में आधुनिक भाषामें वर्णन हो सकता है। लंघन या व्यायाम से किस प्रकार Autophagy प्रवृत्त होती है और लंघन साध्य विकारों में किस प्रकार लाभ होता है, इसका आधुनिक स्पष्टीकरण Autophagy से होता है। Autophagy के प्रक्रिया में वैकृती के कारण स्थूल्य, प्रमेह, कॅन्सर, आदि जैसे अनेक व्याधि होते हैं। इस प्रक्रिया को केंद्रितकर विभिन्न व्याधीयों के चिकित्सा हेतु अनुसंधान प्रगतिपथ पर है।

लङ्घनैः क्षपिते दोषे दीमेऽग्नौ लाघवे सति।

स्वास्थ्यं क्षुत्तृङ् रुचिः पक्तिर्वलमोजश्च जायते॥ – चरक संहिता

उपरोक्त श्लोक चिकित्सा में लंघन के लाभ वर्णित करता है। सम्यक Autophagy के कारण इन लाभों की प्राप्ति होती है।

वर्ष २०१७ में वैद्यक शास्त्र के क्षेत्र में Jeffrey C. Hall, Michael Rosbash और Michael W. Young, को circadian rhythm के आण्विक तन्त्र संबंधी अपने आविष्कार हेतु नोबेल पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। आयुर्वेद अनुसार वर्णित दिनचर्या में स्वास्थ्य रक्षण हेतु प्रथमतः ब्राह्म मुहूर्त में निदा से जागने का उपदेश किया है – ब्राह्म मुहूर्ते उत्तिष्ठेत्। Jeffrey C. Hall, Michael Rosbash और Michael W. Young हमारे शरीर की जैविक कालमापक (Biological Clock) को जानने और समझने में सक्षम रहे। उनका आविष्कार यह बताता है कि किस तरह सजीव प्राणी पृथ्वी के प्रेरण अनुसार अपने जैविक लय (Rhythm) की अनुकूलता बनाए रखते हैं। यह उपलब्धी आयुर्वेद द्वारा वर्णित दिनचर्या और ऋतुचर्या का महत्व प्रस्थापित करती है। ऋतु अनुसार बताएँ हुए दोषों के संचय, प्रकोप और प्रसर का भी स्पष्टीकरण इससे होता है।

वर्ष २०१८ में वैद्यक शास्त्र के क्षेत्र में James P. Allison और Tasuku Honjo (संयुक्त पुरस्कार) इनको negative immune regulation (बल) द्वारा कर्करोग चिकित्सा में अपने आविष्कार हेतु नोबेल पुरस्कार दिया गया।

बलाधिष्ठानमारोग्यमारोग्यार्थः क्रियाक्रमः॥ – चरक संहिता

उपरोक्त श्लोक उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति हेतु बल के महत्व को दर्शाता है। वास्तवतः स्वास्थ्यरक्षण तथा रोगप्रशमन इन आयुर्वेद चिकित्सा के हेतुओं का मुख्य उपदेश बल में वृद्धि करना ही है।

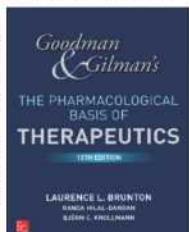
वर्ष २०१९ में वैद्यक शास्त्र के क्षेत्र में William G. Kaelin Jr., Sir Peter J. Ratcliffe और Gregg L. Semenza इनको, कोशिकाएँ किस प्रकार बदलते प्राणवायु (Oxygen) की उपलब्धता के प्रति अनुकूलता प्राप्त करते हैं, के आविष्कार हेतु नोबेल पुरस्कार दिया गया। प्राणवायु संवेदन (Oxygen Sensing) अनेक व्याधियों में केंद्रिय भूमिका निभाता है। उन्होंने यह स्थापित किया है कि कैसे बदलता प्राणवायु का स्तर कोशिका स्थित चयापचय तथा क्रियात्मक कार्य को प्रभावित करता है, जिससे पांडुरोग, कर्करोग और अन्य व्याधियों में नए चिकित्सात्मक पर्यायों का मार्ग प्रशस्त हुआ है। यह आविष्कार हमें पांडुरोग चिकित्सा की संप्राप्ति तथा उपयुक्त घटक जैसे त्रिफला, त्रिकुटी और त्रिमद को समझने में सहायता करेगा।

नोबेल पुरस्कारों की यह सूची देखकर हमें प्रोत्साहित होना चाहिए, क्योंकि यह आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की बढ़ रही दिशा के बारे में हमें अवगत कराती है। Goodman & Gilman's जैसी आधुनिक चिकित्सा शास्त्र के फार्माकोलॉजी की पाठ्यपुस्तक इन अत्याधुनिक आविष्कारों के प्रति अनुकूलता दर्शाती है। उदाहरणार्थ १२ वें संस्करण के ३ रे अध्याय में Autophagy का उल्लेख केवल एक शब्द में किया गया है तथा १३ वें संस्करण में विस्तारपूर्वक Autophagy के तन्त्र का वर्णन प्राप्त होता है। यह निश्चित प्रशंसनीय है।

२०१५ से लेकर २०१९ तक वैद्यक शास्त्रकों मिले हुए पुरस्कारों का विचार करते हुए यह प्रतित होता है कि, आयुर्वेद सिद्धांतों का आधुनिक विज्ञान में अंतर्भाव हो रहा है। निकट भविष्य में आयुर्वेद के सभी मूल सिद्धांतों के लिए हमें आधुनिक स्पष्टीकरण प्राप्त होगा।

उस समय तक हम अपने प्रतिदिन की चिकित्सा में विशुद्ध आयुर्वेद का अनुसरण करते रहेंगे क्योंकि,

**इदमागमसिद्धत्वात्प्रत्यक्षफलदर्शनात्।
मन्त्रवत्संप्रयोक्तव्यं न मीमांस्यं कथञ्चन॥ – वाग्भट**



वैद्य.मिलिंद पाटील
वैद्यकीय सलाहकार
विक्रम डिविजन, श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

पंचामृत लोह गुग्गुल की अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस में कार्मुकता

अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस यह मुख्य रूप से पृष्ठवंश को प्रभावित करने वाला आमवात है। कालांतर में यह शरीर के अन्य संधियों को भी प्रभावित करता है। इस व्याधि में मुख्य रूपसे पृष्ठवंश की अस्थिसंधी में शोथ उत्पन्न होता है, जिससे तीव्र शूल, पीड़ा, विकलांगता उत्पन्न होकर पृष्ठवंश के स्थितीस्थापकता में कमी हो जाती है। शरीर आसन में बदलाव होकर, पृष्ठवंश की प्राकृत गतिशीलता में कमी आ जाती है और व्याधि की गंभीर अवस्था में पृष्ठवंश की अस्थियाँ जुड़ जाती हैं—हन्ति संधिगतः संधीन्।

अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से प्रभावित रूण संख्या यूरोप और एशिया में क्रमशः १.३०—१.५६ दशलक्ष और ४.६३—४.८८ दशलक्ष पायी गई है। युवा भारतीय वयस्कों में आयु के द्वितीय एवं तृतीय दशकों में अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस की घटनाओं में चिंताजनक वृद्धि हुई है। (Rheumatology, April 2014)

अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस के विशिष्ट लक्षण जैसे, पृष्ठवंश और कटिसंधि के बीच के संधि में अत्यधिक वेदना, जो ग्रीवा के संधि तक विस्तृत होती है। अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस के विरकालिन अवस्था में पृष्ठवंश की अस्थियाँ में भूमि तथा अस्थिसौर्षय की संभावना बढ़ जाती है, जिससे मज्जासंस्था नाड़ीयों में क्षति होती है। अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से शारीरिक एवं मानसिक कार्यक्षमता पर प्रभाव पड़ता है, परिणामस्वरूप, मनोवैज्ञानिक परिवर्तन होकर रोगियों की जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

'Frontiers in Medicine' में प्रकाशित, 'Fatigue In Ankylosing Spondylitis Is Associated With Psychological Factors And Brain Gray Matter' अध्ययन के अनुसार, अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस में शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य यह एक महत्वपूर्ण लक्षण है, जो लगभग ५०—७०% रुग्णों में दिखाई पड़ता है। अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य के संप्राप्ति में मनोवैज्ञानिक घटक शामिल हैं, जो अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस रोगियों में असंतोषजनक उपचार एवं जीवन की गुणवत्ता में हानि का महत्वपूर्ण कारण है।

आधुनिक चिकित्सा, अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य में संतोषजनक उपचार प्रदान करने में विफल रही है। सामान्यतः अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य की संप्राप्ति शोथ, मज्जातंतू क्षति और अस्थिक्षय जनित पृष्ठवंश के मांसपेशी की क्षमताहानि से संबंधित है।

अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य के हेतु जटिल है और शारीरविज्ञान, मनोविज्ञान, आचरण, आदि घटक इसके विकृति में सहायक होते हैं। एक अध्ययन के अनुसार, अवसादनाशक चिकित्सा (Antidepressant) अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य लक्षणों में उपशय देती है। यह दर्शाता है कि, मनोवैज्ञानिक घटक अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधी शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य से संबंधित है।

अध्ययन में सबसे महत्वपूर्ण बात यह बताई गई है कि, जैविक चिकित्सा से अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस रोगियों में केवल ६० % वेदना और ३५ % दौर्बल्य से उपशय प्राप्त हुआ, जिससे यह बात स्पष्ट होती है कि, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, भौगोलिक और अन्य बाह्य शोथकारक घटक अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य के कारण है।

"Frontiers in Immunology, August 2019", में प्रकाशित एक अन्य अध्ययन, "Fatigue, Sleep, and Autoimmune and Related Disorders", Autoimmune व्याधियों से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य—विशिष्ट अवयव, कोशिका, मस्तिष्क क्षेत्र और शरीरक्रियात्मक प्रक्रिया से संबंधित है।

नैदानिक रूप से अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य की चिकित्सा कैसे करे? यह एक चूनौति है।

इस संदर्भ में, हम अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस की गंभीरता को कम करने के साथ-साथ इस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य को कम करने में पंचामृत लोह गुग्गुल की भूमिका पर विचार कर सकते हैं।

पंचामृत लोह गुग्गुल की अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस से संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य में कार्मुकता-

पंचामृत लोह गुग्गुल यह पारद-गंधक कज्जली, रजत भस्म, अभ्रक भस्म, सुवर्णमाक्षिक भस्म तथा लोह भस्म युक्त एक प्रसिद्ध गुग्गुल कल्प है।

रसगन्धकताराभ्रामकाणां पलं पलम्।

लौहस्य द्विपलञ्चापि गुग्गुलोः पलसप्तकम्॥

मर्घेदायसे पात्रे दण्डेनाप्यायसेन च।

कटुतैलसमायोगाद् यामद्रुयमतन्द्रितः॥ — भैषज्य रत्नावली

यह उत्तम वातशामक, धातूपोषक, विशेषतः मज्जावह स्रोतस रसायन, वातनाडी बल्य कल्प है, जो मन्याकशरूकागत वात, अवबाहक, मन्यास्तंभ, स्नायुदौर्बल्य, मन्दाम्बि, पाण्डुरोग एवं कोष्ठगतवात, मज्जाक्षय जनित कम्प, गौरव, चिमचिमायन, आदि की चिकित्सा में बहुपयोगी है।

...गदा मस्तिष्कसम्भवाः।

स्नायुजा वातजाश्चापि विनश्यन्ति न संशयः॥

यं पञ्जामृतलौहाख्यो गुग्गुलर्न हरेददम्।

नासौ सज्जायते देहे मनुष्याणां कदाचन॥

पंचामृत लोह गुग्गुल स्थित घटक द्रव्य जैसे, रजतभस्म, अभ्रक भस्म, एवं सुवर्णमाक्षिक भस्म उत्तम मज्जावह स्रोतस रसायन है, जिससे अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य लक्षणों से उपशय मिलने में सहायता होती है। गुग्गुल (दशमूल विशेष शोधित) और कटु तैल श्रेष्ठ वातशामक, वेदनाशामक एवं बल्य हैं।

पंचामृत लोह गुग्गुल की फलश्रृती में वर्णित मस्तिष्क एवं अस्थिमज्जागत विकारों की चिकित्सा में पंचामृत लोह गुग्गुल का महत्व अनन्यसाधारण है। पंचामृत लोह गुग्गुल के घटक द्रव्य जैसे, रजत भस्म, अभ्रक भस्म एवं सुवर्णमाक्षिक भस्म—मेध्य एवं मस्तिष्क बल्य तथा रसायन कर्म से अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस संबंधित शारीरिक एवं मानसिक दौर्बल्य में उपयुक्त साबित होते हैं।

अँकिलोजिंग स्पॉन्डिलायटीस की चिकित्सा में पंचामृत लोह गुग्गुल, रसराजेश्वर रस के साथ सेवन करने से निश्चित रूप से बहुमूल्य लाभ मिलते हैं।

Autoimmune व्याधियों में आमजनित दौर्बल्य निम्नलिखित श्लोक में स्पष्टता से उल्लेखित है:

जनयत्याशु दौर्बल्यं गौरवं हृदयस्य च।

व्याधीनामाश्रयो होष आमसङ्कोऽतिदारुणः॥ —मा.नि.आमवात

पंचामृत लोह गुग्गुल

भैषज्य रत्नावली (मस्तिष्करोग) १०१/१४-१७

मन्याकशरूकागत वात में प्रभावी

उपयुक्तता

- वातविकार
- मस्तिष्क दौर्बल्यजन्य शिरःशूल
- मन्याकशरूकागत वात अनिद्रा
- गृध्रसी
- कंप
- वातनाडी विकृती
- गौरव
- संधिगत वात मज्जाक्षय से उत्पन्न चिमचिमायन
- मांसशोष

मात्रा एवं अनुपान

२ से ३ गोलियाँ दिन में २ या ३ बार, दशमूलरिष्ट, महारासनादि क्वाथ, दूध या कोषण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार

उपलब्धता : ३० गोली,
६० गोली, १००० गोली



Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 0400274
Pancharat Loha Guggul



हृद्रोग चिंतामणि रसः अतिहृद्यानां अग्रः।

विश्वभर में हृद्रोग मृत्यु का एक प्रमुख कारण है। भारत में हृद्रोग एक चौथाई मृत्युओं का कारण है। Global Burden of CVD study के अनुसार भारत में आयुमानिककृत हृद्रोग का मृत्युदर प्रति १००००० जनसंख्या २७२ है जो की वैशिक औसत प्रति १००००० जनसंख्या २३५ की तुलना से अधिक है (Circulation. 2016)।

हालांकि हृद्रोग, अन्य व्याधियों की तुलना में टाला जा सकता है, परंतु अस्वास्थ्यपूर्ण जीवनशैली हृद्रोग का बोझ बढ़ाने के लिए कारण हो रही है।

क्या यह व्याधि हमेशा से मनुष्यजाती को परेशान करती आ रही है या हमारी आधुनिक जीवनशैली बढ़ते हृद्रोग का कारण है? हृद्रोग के इतिहास पर एक दृष्टि आपको आश्चर्यचिकित कर सकती है। हृद्रोग का इतिहास ३५०० वर्ष पहले मिस की ममियों के समय का है (Science Daily, November 17, 2009)। प्राचीन मिस के उच्च सामाजिक-आर्थिक समाज की इन ममियों के धमनियों में धमनीप्रतिचय का पता चलना यह दर्शता है कि हृद्रोग केवल आधुनिक जीवनशैली जनित नहीं है बल्कि यह प्राचीन लोगों को भी प्रभावित करता था।

आज हम यह जानते हैं कि सफल हृद्रोग चिकित्सा कैसे की जाती है, हृद्रोगी की जीवनगुणवत्ता सुधार कर हृद्रोग का उपद्रव कैसे कम कर सकते हैं; फिर भी हम हृद्रोग की पूर्णतः जानकारी प्राप्त कर मानव इतिहास से इसका उन्मूलन करने में असफल रहे हैं। गतदशक के शोध निष्कर्ष Heart Failure with preserved Ejection Fraction (HFpEF i.e. ejection fraction > 50%) के बढ़ते प्रसार (५६%) को दर्शते हैं। इसका बढ़ता प्रातुर्भाव, प्राकृतिक सातत्य (phenotypic persistence cardiology) और प्रभावी उपचारों की अनुपलब्धता, इसे आधुनिक हृदय-चिकित्साविज्ञान (cardiology) के unmet need for treatment में वर्गीकृत करता है।

भारत में हृद्रोग (heart failure-HF) और इसका उपप्रकार HFpEF का प्रचलन बढ़ते वार्धक्य जनसंख्या के कारण बढ़ रहा है। HFpEF सामान्यतः मध्युवृह, उच्चरक्त चाप, अलिंद विकंपन (atrial fibrillation), श्वासावरोध जनित निद्रानाश (sleep apnea), वृक्क और फुफ्फुस रोग जैसे सार्वदेहिक (Systemic) व्याधियों के साथ संबंधित रहता है।

ऐसे रुग्णों में वामनिलय कठोरता (high diastolic left ventricular stiffness) का अत्यधिक महत्व है क्योंकि यह व्यायाम, फुफ्फुस स्रोतोरोध के दौरान वामनिलय के भरने के दबाव (left ventricular filling pressures) में तेजी से वृद्धि कर श्रम करने से अधिक कष्ट का कारण बनता है। इसके अलावा साथ-साथ उपस्थित चयापचय संबंधी विकृती, सार्वदेहिक शोथकारक प्रतिक्रिया (Inflammatory) द्वारा हृदयगत सूक्ष्म रक्तवाहिनीयों में शोथ उत्पन्न करता है। यह शोथ हृदयगत पेशीयों (Myocardial Interstitium) में कोलेजन के जमाव को बढ़ा कर और टिटिन (हृदय मांसपेशियों की स्थितिस्थापकता को नियंत्रित करने वाले लंबे और लचकदार मायोफिल्मेट्री प्रथिन) की स्थितिस्थापकता को कम कर हृदयपेशी शैथिल्य काल (Diastole) के दौरान वामनिलय की कठोरता को बढ़ाता है। (अधिक जानकारी हेतु आकृति देखें।)

दूषित्वा रसं दोषा विगुणा हृदयं गताः।

हृदि बाधां प्रकुर्वन्ति हृद्रोगं तं प्रचक्षते ॥

हालांकि आयुर्वेद ने हजारों वर्ष पहले हृद्रोग का वर्णन केवल लक्षणात्मक रूप से न कर बल्कि चयापचय संबंधी व्याधी के रूप में किया है, जो रसधातु विकृती अथवा आमोत्पत्ति जनित सार्वदेहिक शोथ के कारण होता है। यह New England Journal of Medicine, Feb 13, 2020. में प्रकाशित अध्ययन से सिद्ध होता है।

यांत्रिक अधिभार (Mechanical Overload) द्वारा नहीं बल्कि चयापचय विकृती संबंधित सार्वदेहिक शोथ से प्रेरित HFpEF की परिकल्पना का अध्ययन दो प्राणियों के मॉडल द्वारा किया गया है:

१. अतिस्निग्ध आहार द्वारा प्राकृत चयापचय प्रक्रिया में बाधा।

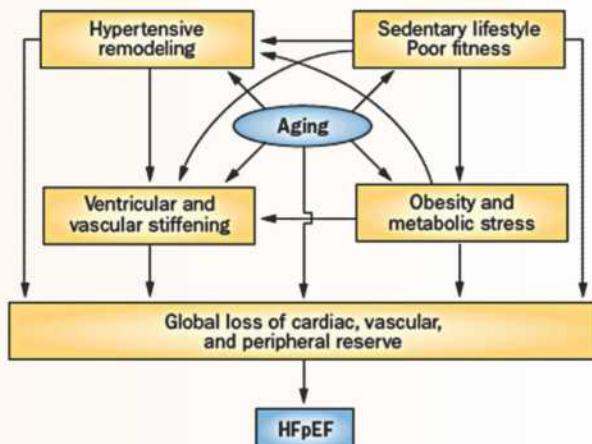
२. Nω-nitro-L-arginine methyl ester का दीर्घकालीन उपचार।

यह हृदयगत रक्तवाहिनीयों की अंतस्त्वचा (endothelial) स्थित nitric oxide synthase का शक्तिशाली अवरोध कर धमनीगत उच्चरक्तचाप (arterial hypertension) उत्पन्न करता है (NEJM, Feb 13, 2020)।

यह निष्कर्ष आधुनिक समय के वैज्ञानिकों को नवीनतम लग सकते हैं परंतु हजारों वर्ष पहले माधवनेदान द्वारा वर्णित हृद्रोग के हेतु तथा संप्राप्ति से भिन्न न होकर

उनके मत को दृढ़ करते हैं।

अत्युष्णितव्यकषायतिकतश्माभियाताध्यशनप्रसङ्गः।
सञ्चिन्तनवैरेगविधारणश्च हृदामयः पञ्चविधः प्रदिष्टः ॥



यह निष्कर्ष हृद्रोग संप्राप्ति विशेषतः HFrEF में चिकित्सा हेतु दृष्टिकोन के साथ-साथ निम्नोक्त चिकित्सा का समर्थन करते हैं:

A. तंतुमय नाशक चिकित्सा: Anti-fibrotic therapy in presence of myocardial fibrosis

B. शोथन चिकित्सा: Anti-inflammatory therapy or inhibition of inducible nitric oxide synthase in the absence of myocardial fibrosis

C. Protein stabilization or inhibition of protein synthesis in interstitial accumulation of destabilized proteins

हृद्रोग चिंतामणि रस स्थित अर्जुन, जटामांसी और मंजिष्ठा में फेनोलिक तत्त्वों की प्रचूर मात्रा होती है जो रस-रक्त स्थित शोथकारक तथा तंतुमय कारक घटक, अंतरालीय शोथ कम कर हृदय वार्धक्य कम करता है। इस प्रकार हृद्रोग चिंतामणि रस, हृदयगत वार्धक्यजनित शोथ (Inflammageing) को कम कर उत्तम हृद्बल्य कार्य करता है।

जटामांसी नाइट्रिकऑक्साइड प्रभाव को नियंत्रित कर, दोनों iNOS और COX-2 तन्त्र को विनियमित कर शोथकारक साइटोकिन्स की अभिव्यक्ति को कम करती है, जो शोथ प्रक्रिया को प्रेरित करती है।

मंजिष्ठा यह रक्तस्कंदन नाशक (anti-thrombotic) तथा नवरक्तवाहिनी उत्पादक (pro-angiogenic agent) है और हृदयगत धमनीयों की अंतस्त्वचा (endothelium) की रक्षा करती है।

इन औषधी वनस्पतीयों के साथ-साथ अनुभूत रसौषधी जैसे बृहत वात चिंतामणि रस (सुवर्णयुक्त), पर्णचंद्रोदय मकरध्वज रस, अभ्रक भस्म और अकिक पिष्टी हृद्रोग चिंतामणि रस के मुख्य घटक हैं। वे अपने रसायन गुणों द्वारा रसधातु सारता बढ़ाकर, चयापचय को नियमित कर हृद्रोग चिकित्सा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, इस प्रकार शोथकारक घटकों को प्रतिबंधित कर हृद्रोग के संकट को कम करते हैं।

इन गुणों के कारण हम यह कह सकते हैं कि:

हृद्रोग चिंतामणि रसः अतिहृद्यानां अग्रः।



हत्थूलधासकासधनं बल्यं हृदयं रसायनम् ।
मर्मरक्षां च कृत्वा यत् हृद्रोगान् निखिलाञ्जयेत् ॥

रसौषधियों की शाश्वतत्व।

आयुर्वेद का द्विविध प्रयोजन “स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम्” अर्थात् निरोगी व्यक्ति के स्वास्थ्य का संरक्षण और संवर्धन तथा “आतुरस्य विकारप्रशमनम्” अर्थात् व्याधि की चिकित्सा करना है।

स्वस्थस्य स्वास्थ्यरक्षणम् आतुरस्यविकारप्रशमनम्।

यह सकारात्मक स्वास्थ्य शरीर के मूल तत्व जैसे दोष, धातु और मल की साम्यता (Homeostasis) का परिणाम है।

स्वस्मिन् तिष्ठति इति स्वस्थः।

इस स्वास्थ्यपूर्ण साम्यता को निरंतर और निर्बाधित बनाए रखने के लिए हजारों वर्षों से आयुर्वेद आचार्योंने परिश्रम और मिताहार का उपदेश किया है। स्वास्थ्यरक्षण हेतु परिश्रम और मिताहार इन दोनों को आयुर्वेद के देवता अश्विनी कुमारों की उपमा दी गई है। यहाँ हम परिश्रम को शल्य चिकित्सक और मिताहार को कायचिकित्सक मान सकते हैं। परिश्रम और मिताहार का चिकित्सा में अनन्य साधारण महत्व है, इसलिए उनकों अश्विनी कुमारों की उपमा दी गई है। आज भी स्वास्थ्य रक्षण और रोग चिकित्सा में परिश्रम और मिताहार की महत्ता सर्वविदित हो गई है। निम्नलिखित हारित संहिता का श्लोक परिश्रम और मिताहार का महत्व अत्यंत विशद करता है।

परिश्रममिताहारौ भुगतावधिनीसुतौ।

तावनादृत्य नैवाहं वैद्यमन्यं समाश्रये॥ – हारित संहिता

जब मनुष्य अपने जीवनकाल में इन स्वास्थ्यपूर्ण आचरणों को बनाए रखने में विफल रहा, तब मानव जाति को विभिन्न रोगों के भय का सामना करना पड़ा। इन रोगों के चिकित्सा हेतु पंचविध कषाय कल्पना का विकास हुआ। पंचविध कषाय कल्पना उत्तरोत्तर लघु होने वाली विभिन्न पांच औषधी स्वरूपों का एक संयोजन है:

पञ्चविधं कषायकल्पनमिति तद्यथा–स्वरसः।

कल्कः शृतः शीतः फाण्टः कषाय इति।

तेषां यथापूर्वं बलाधिक्यम्। – चरक

१. स्वरसः।

२. कल्कः।

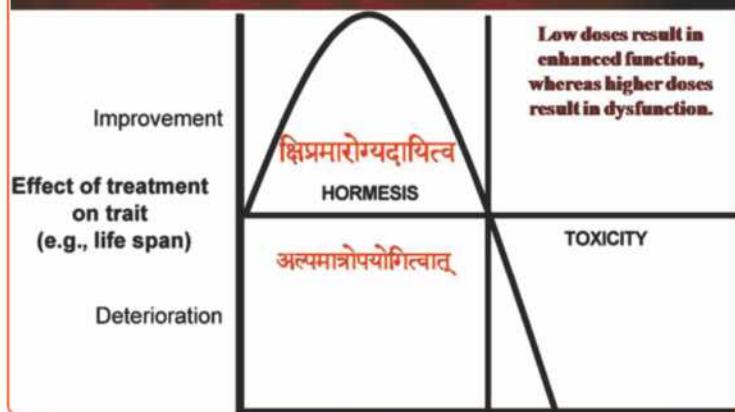
३. कवाथः।

४. हिमः।

५. फाण्टः।

इस पञ्चविध कल्पना का विकास अन्य उपकल्पनाओं जैसे चूर्ण, वटी-गुटी-मोटक, अवलेह, आसव-अरिष्ट, आदि में भी होता रहा, जिससे अरुचि, सेवन में कठिनाई, वीर्य हानि, अन्वस्थित मात्रा, आदि जैसे दोष दूर करने में सहायता मिली।

Dose-Response Curve of a Treatment with a Hormetic Effect



इन उपकल्पनाओं के विकास के कारण पञ्चविध कल्पना स्थित स्थिर (Stable) कल्पों की स्थापना हुई।

जीवनशैली में प्रगति के साथ इन औषधी स्वरूपों का भी तत्कालीन गंभीर, आपातकालीन, जीवनशैली संबंधी और जीण व्याधीयों के चिकित्सा हेतु पुर्णतः प्रभावी नहीं थे। इसलिए रसौषधियों के भूमिका की नींव रखी गई। रसौषधि अल्पमात्रा में उपयोगी होती है, अरुचि नहीं होती फिर भी शीघ्र आरोग्यदायी होने कारण वनस्पती औषधियों की चिकित्सा से तुलना में श्रेष्ठ होती है।

अल्पमात्रोपयोगित्वात् अरुचेरप्रसङ्गतः।

क्षिप्रमारोग्यदायित्वात् औषधिम्योऽधिको रसः॥

रसौषधियों की कार्मुकता इस प्रकार समझी जा सकती है।

यह रसौषधियाँ आधुनिक समय के कष्टसाध्य और असाध्य व्याधी जैसे हृद्रोग, स्थौल्य, प्रमेह, मानसिक तनाव, नपुंसकता, कर्करोग, वार्धक्य, आदि के उपचार हेतु एक श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धति है।

न दोषाणां न रोगाणां न पुंसांक्ष परीक्षणम्।

न देशस्य न कालस्य कार्यं रसचिकित्सते॥

असाध्येषु दातव्यो रसोऽतः श्रेष्ठ उच्यते।

जीव शरीर में आगंतुज बाधा, आपत्ति या तनाव को विरोध करने की क्षमता रहती है, जिससे वह संकंठ के समय संकटों का मुकाबला कर सकता है, और जीवित रहने हेतु स्वयं में कुछ परिवर्तन भी ला सकता है।

आयुर्वेद शास्त्र के उपचार जैसे मिताहार (Calorie Restriction), शोधन, रसचिकित्सा, महाकषाय, अभ्यंग, परिश्रम, आचार रसायन, आदि का वर्णन निर्बाधित स्वास्थ्यपूर्ण वार्धक्य अथवा दीर्घायु हेतु किया गया है। संभवतः यह सर्व उपरोक्त उपचार प्राणी शरीर के लिए अल्प तनाव उत्पन्न करने का कार्य करते हैं, जिसके फलस्वरूप प्राणी शरीर अधिक तनाव सहन करने की क्षमता प्राप्त करते हैं। यह बढ़ी हुई क्षमता स्वास्थ्यरक्षण तथा रोगप्रशमन हेतु उपयुक्त होती है।

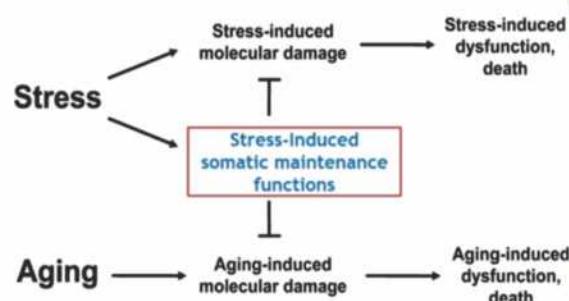
आधुनिक विज्ञान में अल्पतनाव से प्राणी शरीर में उत्पन्न होनेवाले स्वास्थ्यवर्धक प्रक्रिया को Hormesis कहा गया है। अल्पतनाव (Mild stress) द्वारा प्रतिरक्षा तथा क्षति को दूर करने वाले क्षमता (Repair Pathway) तन्त्र को उद्दिष्ट करना पेशी (कोषाण्) और सजीव प्राणीयों के लिए लाभकारी प्रभाव दर्शाता है।

धातुओं के भस्म, शारीरिक और मानसिक चुनौतीयाँ, आदि जैसे विभिन्न तनावों का अल्प मात्रा में दीर्घकालिन अथवा आजीवन सेवन Hormesis द्वारा वार्धक्य प्रक्रिया (Aging Process) को मंद करता है।

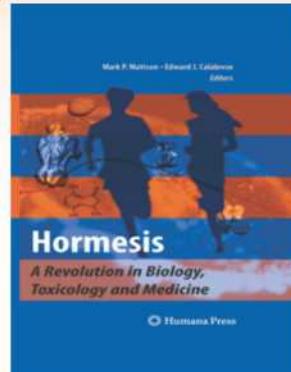
पारद युक्त रसकल्प काष्ठौषधियों से श्रेष्ठ होते हैं और इसलिए

असाध्येषु दातव्यो रसोऽतः श्रेष्ठ उच्यते।

Possible Mechanism of Stress-Response Hormesis

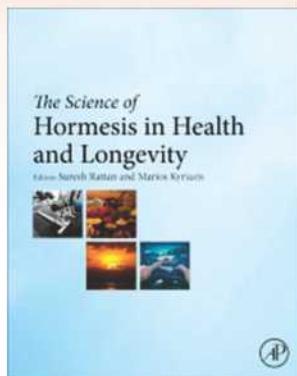


Both stressors and aging cause molecular damage, leading to dysfunction and death



The Hormetic Pharmacy: The Future of Natural Products and Man-Made Drugs in Disease Prevention and Treatment
Edward J. Calabrese and Mark P. Mattson

'आस्यासुख' – स्वप्नसुख, प्रधान जीवनशैली Hormetic प्रक्रिया कों दबाते हैं। जिससे स्थौल्य और प्रमेह जैसे विकार उत्पन्न होते हैं।



The Science of Hormesis in Health and Longevity
1st Edition

Editors: Suresh I. S. Rattan
Marios Kyriazi

शिशु भरण रस™

वर्णयुक्तान्तिदं श्रेष्ठं पुष्टिकृदबलवर्धनम् ।
बालानां वह्निकृद्यैव दन्तोदभेदगदापहम् ॥



हृद्रोग चिंतामणि रस

हृत्शूलक्षासकासधनं बल्यं हृद्यं रसायनम् ।
मर्मरक्षां च कृत्वा यत् हृद्रोगान् निखिलाज्जयेत् ॥



मधुमेह कुसुमाकर रस

मेहानामनुषज्ञिषु कान्तिश्रीबलवर्धनम् ।
मेहरो रसः श्रेष्ठः प्रमेहितकारकः ॥



बीजपुष्टी रस™

अपत्यसंतानकरः बीजदोषनिवारणः ।
बीजपुष्टैर्पुरुषस्य बीजपुष्टि रसः स्मृतः ॥



रसराजेश्वर रस®

मन्याशूलं कटिशूलं अन्यान् वातगदान्हरेत् ।
पक्षाधातादिरोगेषु बल्यो वृष्यो रसायनः ॥



पित्तशेखर रस

छर्द्यम्लपित्तशूलध्नो ग्रहण्यामयनाशनः ।
बहुनात्र किमुक्तेन पित्तरोगेषु शस्यते ॥



कास श्वास हारी रस™

कल्पस्य सतताभ्यासः सोतोबलप्रदायकः ।
कासं पञ्चविधं हन्ति सर्वशासनिवारणः ॥



स्त्री व्याधिहारी रस

गर्भार्थिनीनां नारीणां रसोऽयं शुभकारकः ।
स्त्रीव्याधिहारीयोगेन स्त्रीष्वपत्यं प्रतिष्ठितम् ॥



स्वास्थ्य गुणवत्ता वर्धन में वाजीकरण औषधियों की प्रासंगिकता

आयुर्वेद ग्रंथों में आयुर्वेद का वर्णन शाश्वत इस प्रकार से किया गया है। स्वभावसंसिध्दलक्षणत्व, भावस्वभावनित्यत्व और अनादित्व इन तीन कारणों से आयुर्वेद को शाश्वत माना गया है। यह वस्तुतः अत्यंत स्पष्ट होनेपर भी हम चाहते हैं कि, आधुनिक काल में यह आयुर्वेद का शाश्वतत्व जनमानस में सुदृढ़ बने और सौभाग्य से यह प्रक्रिया आरंभ हुई है।

संदर्भप्रकाशित 'Declines in Sexual Activity and Function Predict Incident Health Problems in Older Adults: Prospective Findings from the English Longitudinal Study of Ageing, Archives of Sexual Behavior, 2019' अध्ययन में एक परीक्षण के परिणामों कों देखने पर यह लगता है कि, आयुर्वेदशास्त्र सर्वदा और सर्वथा शाश्वत रहेगा। उपरोक्त प्रकाशित अध्ययन में शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का गहरा संबंध लैगिंग स्वास्थ्य के साथ प्रस्थापित किया गया है।

'A new sexual science' लेख में इस बात का अध्ययन किया गया है कि, वार्धक्यावस्था में अस्वास्थ्य के कारणों में कामेच्छा और कामोपभोग में कमी एक प्रमुख घटक है। इस अध्ययन में ५० वर्ष के उपर आयुवाले २५७७ पुरुष और ३१९५ महिलाओं के उपरुपर्णीय अध्ययन द्वारा कामेच्छा, कामोपभोग और सामान्य स्वास्थ्य इनका संबंध प्रस्थापित किया है। संपूर्ण अध्ययन का तात्पर्य है कि कामेच्छा और कामोपभोग की कमी हृद्रोग, पक्षाधात, कर्करोग जैसे विकारों के चिह्न समजने जाने चाहिए। चिकित्सक को यह ज्ञात होना चाहिए है कि वृद्धावस्था में कामेच्छा और कामोपभोग का अभाव अन्य गंभीर व्याधियों के साथ जुड़ा हो सकता है।

इस लेख के निष्कर्ष में जो पहला वाक्य है, वह वैद्यों के लिए नया न लगे परंतु निष्कर्ष में लिखे हुए प्रथम वाक्य में काम और स्वास्थ्य का गहरा संबंध लेखकों को निश्चित नया सा लगता है। जब की हम आयुर्वेद के जानकार आहार, निद्रा और मैथुन (ब्रह्मचर्य) को जीवन के त्रिदंड स्वरूप समझते हैं।

कामेच्छा एवं कामोपभोग ये दोनों स्वास्थ्य परिणामों से जूँड़े हुए हैं। ५७०० से अधिक व्यक्तियों से प्राप्त जानकारी से यह देखा गया है कि, ५० वर्ष या अधिक आयु के व्यक्तियों में कामेच्छा और कामोपभोग संबंधि गतिविधि की कमतरता से गंभीर स्वरूप की व्याधियों की उत्पत्ति की जोखिम दो तिहाई तक वृद्धिंगत हो जाती है।

महिलाओं में यदि कामेच्छा और कामोपभोग मात्रा कम हो तो, उनमें खराब स्वास्थ्य संबंधि परिणामों की आशंका ६४ प्रतिशत अधिक बढ़ जाती हैं। पुरुष जो कामेच्छा और कामोपभोग में कम रुचि रखते हैं, उनमें कर्करोग के निदान की संभावना में ६३ प्रतिशत और जीर्ण गंभीर व्याधियों की संभावना में ४१ प्रतिशत की वृद्धि होती है।

कामेच्छा और कामोपभोग वृद्धि की अपेक्षा जिन पुरुषों में कामेच्छा और कामोपभोग में क्षति थी, उनमें हृद्रोग की संभावना में ३३ प्रतिशत की वृद्धि प्राप्त हुई।

इसलिए, गत वर्षों में कामेच्छा एवं कामोपभोग में पाई जानेवाली क्षति पुरुष की वयस्क स्वास्थ्य परिणामों को प्रभावित करती हैं। कामेच्छा एवं कामोपभोग गतिविधियों का पुरुष और स्त्री दोनों के स्वास्थ्य पर दुष्प्रभाव देखा गया है।

वस्तुतः धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इनको चतुर्विधि पुरुषार्थ माना गया है। इनका मूलाधार आरोग्य है। विविध विकार इस आरोग्य का हास करते हैं।

कामेच्छा और कामोपभोग शरीर में Endorphins नामक हार्मोन्स की उत्पत्ति करता है। इन हार्मोन्स का प्रमुख कार्य मन में प्रसन्नता को उत्पन्न करना है। परिणाम स्वरूप शरीर में बढ़े हुए Endorphins कर्करोग पेशीयों को नष्ट करते हैं और विभिन्न रोगकारक विषाणुओं का भी नाश करते हैं।

Endorphins के कारण प्राणवहस्तोत्स के जीवाणु संक्रमण कम होते हैं और तमक्षवास में भी लाभ दिखाई देता है। संक्षेप में Endorphins वृद्धावस्था में होनेवाले दौर्बल्य, हृद्रोग, कर्करोग, आदि इनमें लाभ देते हुए स्वस्थपूर्ण जीवन जीने

के लिए सहाय्य करते हैं। Endorphins के कारण होनेवाले परिणाम Natural killer cell की कार्मुकता बढ़ाकर होते हैं।

आयुर्वेद का "स्वास्थ्यरक्षणम् और आतुरस्य विकारप्रशमनम्" यह द्विविध प्रयोजन है। स्वस्थ्य व्यक्ति को स्वस्थ बनाए रखने के लिए दिनचर्या, ऋतुचर्या तथा सद्वृत्त के साथ-साथ रसायन और वाजीकरण औषधियों के प्रयोग का उपदेश दिया है।

चरक संहिता में रसायन अध्याय में स्पष्ट वर्णन किया है की,

स्वस्थस्योर्जस्करं यत्तु तदवृष्टं तद्रसायनम्, प्रायः.....,

आयुर्वेद में आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य त्रय उपस्तंभ के रूप में वर्णित हैं। अनुसंधान की परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि, आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य आरोग्य के महत्वपूर्ण तीन स्तंभ हैं। यहाँ हम ब्रह्मचर्य को मैथून के रूप में देखते हैं, जैसे की आयुर्वेद ग्रंथों में वर्णित हैं।

त्रय उपस्तम्भा इति-आहारः, स्वप्नो, ब्रह्मचर्यमिति;

एभिस्त्रिभिर्युक्तियुक्तैरूपस्तब्धमुपस्तम्भैः शरीरं

बलवर्णोपचयोपचितमनुवर्तते यावदायुः संस्कारात्

संस्कारमहितमनुपसेवमानस्य, य इहौपदेश्यते - चरक

अर्थात् वाजीकरण और रसायन औषध स्वस्थ्य व्यक्ति के शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करता है। विभिन्न वाजीकरण प्रयोगों के फलशृती में:

१. बृहणो बलवर्धनः।

२. बलवर्णस्वरकरः पुमांस्तेन वृषायते॥

३. एष बृद्ध्यश्च बल्यश्च बृहणश्च रसोत्तमः।

४. बृहण चैव बलप्रदं च॥

५. वृद्ध्यं बल्यं च वर्णं च कण्ठं य बृहणमुत्तमम्।

६. वर्णस्वरबलोपेतः पुमांस्तेन वृषायते॥

७. वीर्योपन्नो बलवर्णयुक्तः।

ये लाभ देखे जाते हैं।

वाजीकरण औषधियों के उपरोक्त सभी लाभ आहार एवं निद्रा के गुणवत्ता से भी संबंधित हैं। इससे, स्वास्थ्य गुणवत्ता वर्धन में वाजीकरण औषधियों की प्रासंगिकता स्पष्ट होती है।

शिलाप्रवंग®

(मौक्तिकयुक्त)

उपयुक्तता

- | | |
|-----------------|------------------|
| • प्रमेह | • दौर्बल्य |
| • मूत्रदाह | • ओजक्षय |
| • मूत्रकृच्छ्र | प्रमेह के उपद्रव |
| • शीघ्रवीर्यपतन | • हस्तपादतलदाह |
| • अष्टीला | • दुर्बलता आदि |
| • कलैव्य | |

मात्रा एवं अनुपान

१ से २ गोलियाँ दिन में २ बार दूध
अथवा चिकित्सक की सलाह अनुसार

उपलब्धता : ४० गोली, १०० गोली



Shree Dhootapapeshwar Standards
SOS Monograph No. 070008
Shilaprapang (with Mukti)



प्रमेह में व्याधिसंकर की व्यापकता

सामान्यतः: वयस्कों में अनेक व्याधियों का साहचर्य पाया जाता है। चिकित्सा करते समय बहुत बार हम देखते हैं कि प्रमेह, स्थौल्य, उच्चरक्तचाप, आदि विकार एक ही व्यक्ति में पाए जाते हैं। किसी व्यक्ति में उपस्थित दों या उससे अधिक व्याधियों के समूह को व्याधिसंकर कहा जाता है। जैसे आयु बढ़ती है वैसे व्याधिसंकर की संभावना अधिक बढ़ती है।

विशेषतः: ६५ साल से कम आयु के लोगों में व्याधिसंकर का प्रचलन अधिक पाया गया है। इसके अलावा, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र में परामर्श हेतु आनेवाले जीर्ण स्वास्थ्य समस्याओं से युक्त एक तिहाई से भी अधिक रुग्ण चार या अधिक जीर्ण व्याधियों से पीड़ित होते हैं और कुछ रुग्णों में दस या अधिक जीर्ण व्याधियाँ देखी जाती हैं। व्याधिसंकर के कारण चिकित्सा अधिकाधिक दुष्कर होती है।

सफल चिकित्सा के लिए व्याधिसंकर में स्थित विभिन्न व्याधियों के संप्राप्ति घटकों का विस्तार से विचार करना आवश्यक होता है और सामान्य चिकित्सासूत्र का विशेष विचार भी आवश्यक होता है, जिससे व्याधिसंकर की चिकित्सा सफल होगी।

विश्वभर में प्रमेह रुग्णों की संख्या वर्ष १९८० में १०८ दश लक्ष (४.७%) से वर्ष २०१४ में ४२२ दश लक्ष (८.५%) तक वृद्धि हुई है। प्रमेह रुग्णों में व्याधिप्रकृतिः व्याधिसंकर की संभावना अधिक होती हैं।

आधुनिक विज्ञान में यकृत को चयापचय का प्रमुख अवयव माना जाता है। सेवन किये गये अन्न के पचन से लेकर चयापचय तक यकृत का अत्यधिक योगदान होता है। प्रमेह एक चयापचय के संबंधी व्याधि होने के कारण प्रमेह और यकृत विकार का निकट संबंध है। प्रमेह संलग्नित व्याधिसंकर में अम्यजनित यकृत विकार (Non-Alcoholic fatty liver disease-NAFLD) भी शामिल हैं। अम्यजनित यकृत विकार इंसुलिन प्रतिरोध (Insulin Resistance-IR) से संबंधीत है, जो ग्लूकोज और लिपीड चयापचय को प्रभावित करता है और जिससे स्थौल्य एवं प्रमेह की संभावना में वृद्धि होती है।

'Hepatology Research, 2012' में प्रकाशित अध्ययन 'Liver and diabetes a vicious circle', के अनुसार, यकृत एवं प्रमेह में एक जटिल और परस्पर संबंध होता है तथा इंसुलिन प्रतिरोध यह मुख्य कारण है।

अम्यजनित यकृत विकार प्रमेह का एक प्रमुख कारण है और प्रमेह यकृतविकार की उत्पत्ति में महत्वपूर्ण घटक हैं।

'(Scientific Reports volume 10, Article number: 2416 -2020)' में प्रकाशित एक अध्ययन, 'MorbiNet: multimorbidity networks in adult general population. Analysis of type 2 diabetes mellitus Comorbidity' के अनुसार प्रमेह एवं यकृत विकार व्याधिसंकर के रूप में उपस्थित रहनेपर प्रमेह की जटिलता एवं गंभीर यकृत विकार उत्पत्ति की संभावना में वृद्धि होती है।

बहुद्रवः श्लेष्मा दोषविशेषः॥

बहुबद्धं मेदो मांसं शरीरजक्लेदः शुक्रं शोणितं वसा

मज्जा लर्सीका रसश्वैजः संख्यात इति दूष्यविशेषः॥ – चरक संहिता

आचार्य चरक ने प्रमेह व्याधि के संप्राप्ति में रस, रक्त से लेकर शुक्र, वसा एवं ओज आदि विभिन्न दूषों के संग्रह की दुष्टी का वर्णन किया है, जो की शरीर के समस्त धातुओं का समावेश करता है। जैसे की हमने देखा है, प्रमेह यह एक चयापचय विकृतिजन्य व्याधि है और यकृत की चयापचय प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इससे यकृत का प्रमेह के उत्पत्ति एवं विकास में संबंध स्पष्ट होता है और इसलिए, प्रमेह के चिकित्सा में यकृत संरक्षक द्रव्यों के उपयोग का महत्व स्पष्ट है।

मधुमेह कुसुमाकर रस की कार्मुकता:

मधुमेह कुसुमाकर रस विभिन्न प्रमेहदृष्ट वनस्पति एवं सुवर्णयुक्त वसंत कुसुमाकर रस, शोधित शिलाजतु और यशद भस्म युक्त का एक उत्तम कल्प है। इसमें स्थित घटकद्रव्य जैसे हरिद्रा, आमलकी और गुड्डी उत्तम यकृतसंरक्षक के साथ-साथ अग्न्य प्रमेहदृष्ट हैं। अन्य घटक द्रव्य जैसे मामेजवा और असन मधुमेह कुसुमाकर रस स्थित प्रमुख प्रमेहदृष्ट वनस्पति है। मधुमेह कुसुमाकर रस के सेवन से प्रमेह रुग्ण में व्याधिसंकर की तीव्रता कम होने में सहायता होती है। दीर्घायु प्रासी हेतु इन रसायन द्रव्यों की प्रमुख भूमिका होती है। जीवनशैली में उपयुक्त बदलाव जैसे आहार नियंत्रण और शारीरिक चयापचय के साथ ही रसायन द्रव्यों का सेवन प्रमेह एवं व्याधिसंकर में अद्भुत लाभ देता है।



मधुमेह कुसुमाकर रस®

उत्कृष्ट मधुमेहदृष्ट औषधी मधुमेह एवं संबंधित उपद्रव प्रतिबंधक और रसायन

उपयुक्तता

मधुमेह और संबंधित उपद्रव

- मधुमेहजन्य नेत्रविकार
- दौर्बल्य
- इंद्रियशैथिल्य
- दुष्ट ब्रण



मात्रा एवं अनुपान

१ से २ गोलियाँ दिन में एक या दो बार गोधृत, कोण जल के साथ अथवा रोगावस्थानुसार



Shree Dhootapapeshwar Standards
SDS Monograph No. 1902614
Madhumeha Kusumakar Ras



उपलब्धता : ३० गोली (ब्लिस्टर पैक)

वातकलाकलीय आधुनिक व्याख्या

चरक संहिता सूत्रस्थान के १२ वे वातकलाकलीय अध्याय में वातदोष के गुण और दोषों का विस्तार से वर्णन प्राप्त होता है। वातदोष को आयुर्वेद के ग्रंथों में अचिंत्य माना गया है। सद्यःकालिन आधुनिक वैद्यक संशोधनों से वातदोष कार्मुकता के कारणों का स्पष्टीकरण हो रहा है। आयुर्वेद में यह प्रसिद्ध है की,

पितं पड्गुः कफः पड्गुः पड्गवो मलधातवः।

वायुना यत्र नीयन्ते तत्र गच्छन्ति मेघवत्॥

वातदोष के प्रधान कार्य का वर्णन :

वायुस्तन्त्रयन्त्रधरः	शरीर के प्राणादि स्वरूप यंत्र का धारण करनेवाला।
प्राणोदानसमानव्यानापानात्मा	प्राण, उदान, समान, व्यान, अपान, स्वरूप।
प्रवर्तकश्वेष्टानामुच्चावचानाम्	विविध चेष्टाओं का प्रवर्तक।
नियन्ता प्रणेता च मनसः:	मन का नियमन और प्रेरण करनेवाला।
सर्वेन्द्रियाणामुद्योजकः	सर्व इंद्रियोंको प्रेरक।
सर्वेन्द्रियार्थानामभिवोढा	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध, आदि इंद्रियार्थों का ग्रहण करनेवाला।
सर्वशरीरधातुव्यूहकरः	सर्व शरीर धातु की रचना करनेवाला।
सन्धानकरः शरीरस्य	शरीर को जोड़नेवाला।
प्रवर्तको वाचः	वाणी को प्रवृत्त करनेवाला।
प्रकृतिः स्पर्शशब्दयोः	शब्द और स्पर्श का मूल।
श्रोत्रस्पर्शनयोर्मूलम्	कर्ण और त्वचा का मूल।
हृषोत्साहयोर्योनिः	हृष और उत्साह कारक।
समीरणोऽग्नेः	अग्निका दीपन करनेवाला।
दोषसंशोषणः	दोष शोषण करनेवाला।
क्षेप्ता बहिर्मलानां	मलों को बाहर फेकनेवाला।
स्थूलाणुस्रोतसां भेत्ता	स्थूल और अणु स्रोतसों को विभक्त करनेवाला।
कर्ता गर्भाकृतीनाम्	गर्भ को आकार देनेवाला।
आयुषोऽनुवृत्तिप्रत्ययभूतः।	आयु के बने रहने का साक्षी।

वात के इन सब कार्यों का इतना स्पष्ट वर्णन प्राचीन ग्रंथों में पाया जाना अत्यंत आश्चर्य जनक है। यह केवल ऋषियों की दिव्य दृष्टि से हो सकता है। क्योंकि इतना सूक्ष्मातिसूक्ष्म विचार करना साधारण व्यक्ति का काम नहीं है।

The New England Journal of Medicine, January, 2019 में प्रकाशित "New Neuroscience of Homeostasis and Drives for Food, Water, and Salt" इस लेख में यह बताया गया है की, शरीर स्वास्थ्य के लिए उर्जा, उदक और लवण रस को अपनी प्राकृत मात्रा में बनाए रखना आवश्यक है। मस्तिष्क में इनकों प्राकृत रखने के लिए एक साम्यावस्था बनाए रखनेवाले मज्जा केंद्र पाए गए हैं। इनके द्वारा ऊर्जा, उदक और लवण के वैषम्य को जाना जाता है और वैषम्य होनेपर साम्य प्रस्थापित करने के लिए उपाय किये जाते हैं। इन वेगों का नियंत्रण करने के लिए मस्तिष्क के जिम्मेदार केंद्र ज्ञात हो चुके हैं।

जीवित रहने के लिए ऊर्जा अत्यंत आवश्यक होती है, जो सामान्यतः आहार से प्राप्त होती है। आहार के अनुपलब्धी होनेपर ऊर्जा मिलती रहनी चाहिए इसलिए ऊर्जा का संचय मेदधातु में किया जाता है। मेदधातु स्थित ऊर्जा पर्याप्त समय तक शरीर में भांडार के रूप में संचित कि जाती है। यह मेदधातु में ऊर्जा संचय मस्तिष्क से सुचारू रूपसे संभाला जाता है। जब ऊर्जा क्षय होने लगता है तब मस्तिष्क ऊर्जा को बचाए रखते हौं क्षुधावर्धन करता है। यह कार्य लेप्टिन नाम के सम्प्रेरक Hormone से होता है। मेदधातु में लेप्टिन का निर्माण होता है, जिसका संज्ञान मस्तिष्क के मज्जा पेशियों को होता है। लेप्टिन कम होनेपर ऊर्जा का व्यय रोका जाता है और क्षुधा बढ़ती है। आयुर्वेद चिकित्सा का द्विविध उपक्रम लंघन और बृंहण इनका विशदिकरण शायद इन अनुसंधानों से होगा।

नविनतम Neuroscientific साधनों से हमारा उदक के संतुलन का ज्ञान अच्छी तरह से बढ़ रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह अवगत हो रहा है की किस प्रकार मस्तिष्क में तृष्णा वेग का उद्भव होता है। मस्तिष्क में तृष्णा वेग को उत्पन्न करनेवाले विशिष्ट मज्जा केंद्रों को पहचाना गया है।

इस लेख के अनुसार अन्न, उदक और लवण की कमी होनेपर मस्तिष्क में विविध वेगों की उत्पत्ति होती है। इन प्रत्येक के क्षय होनेपर भिन्न-भिन्न मज्जा केंद्र उद्विपित होनेपर भिन्न-भिन्न वेग जैसे क्षुधा और तृष्णा आदिकी उत्पत्ति होती है।

वाग्भट ने अष्टङ्गहृदय के सूत्रस्थान के चतुर्थ रोगानुत्पादनीय अध्याय में रोगोत्पत्ति न होने के लिए किन वेगों को धारण नहीं करना चाहिए इसका वर्णन किया गया है।

वेगान्न धारयेद्वातविष्मूत्रक्षवतृक्षुधाम्।

निद्राकासश्रमक्षासजृम्भाश्रुच्छदिरेतसाम्॥ – वाग्भट

हजारों वर्षपूर्व लिखे हुए यह आयुर्वेदोक्त विज्ञान आधुनिक लोगों को इन दिनों ज्ञात हो रहा है। आधुनिक वैज्ञानिकों ने दोषसाम्य बनाए रखने के लिए आवश्यक मज्जा केंद्रों की पहचान कर ली है। इस लेख के अनुसार वेगोदिरण और वेगधारण के लिए जिम्मेदार मज्जा केंद्रों के पहचान आधुनिक वैज्ञानिकों के लिए केवल शुरुआत है। अभी तो इस दिशा में बहुत आगे जाना शेष है। यह हृष की बात है की आयुर्वेद का वैज्ञानिकत्व क्रमशः सिद्ध होते जा रहा है।



१७७२ से आयुर्वेद सेवा

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
स्वास्थ्य सेवा विभाग

श्री धूतपापेश्वर लिमिटेड

१३५, नानुभाई देसाई रोड, खेतवाड़ी, मुंबई - ४०० ००४.

फोन : ९१-२२-६२३४ ६३०० फॉक्स : ९१-२२-२३८८ १३०८

ई-मेल : healthcare@sdlindia.com

वेब साईट : www.sdlindia.com